Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.S.O. -3

विकास का समाजशास्त्र

(Sociology of Development)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. V.B. Singh,* M.A. (Sociology, Pol. Science, LL.B.), Ph.D.

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 480/-

Content

विकास का समाजशास्त्र

(Sociology of Development)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-4

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

विकास की संकल्पना

1. विकास और प्रगति : आर्थिक और सामाजिक पक्ष 1
(Development and Progress: Economic and Social Aspect)
2. परिवर्तन, आधुनिकीकरण और विकास 16
(Changes, Modernization and Development)
3. सामाजिक, मानवीय एवं लैंगिक विकास 33
(Social, Humanitarian and Gender Development)
4. स्थायी विकास (Permanent Development) 48

विकास का परिप्रेक्ष्य

5. आधुनिकीकरण (Modernization) 57

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

6. विकास का उदारवादी परिप्रेक्ष्य (Liberal Perspective of Development) 65

7. विकास का मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य (Marxist Perspective of Development) 73

8. विकास पर गाँधीवादी परिप्रेक्ष्य (Gandhist Perspective of Development) 86

विकास की समालोचना

9. अल्पविकास का आश्रयता सिद्धांत 91
(Refuge Theory of Under-Development)

10. सामाजिक और मानव विकास (Social and Human Development) 99

11. विकास का लैंगिक परिप्रेक्ष्य (Gender Perspective of Development) 109

सतत विकास के उपागम

12. सूक्ष्म नियोजन (Micro Planning) 119

13. पारिस्थितिकी, पर्यावरण और विकास 126
(Ecology, Environment and Development)

14. नृजातीय विकास (Anthropological Development) 137

15. जनसंख्या और विकास (Population and Development) 143

विकास का तुलनात्मक अनुभव

16. भारत (India) 152

17. कनाडा (Canada) 166

18. जिम्बाब्वे (Zimbabve) 174

19. ब्राजील (Brazil) 183

भूमण्डलीकरण

20. भूमण्डलीकरण के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम 192
(Economic, Social and Cultural Dimensions of Globalization)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
21.	उदारीकरण और संरचनात्मक समायोजन (Liberalization and Structural Adjustment Work)	214
22.	भूमंडलीकरण, निजीकरण और स्वदेशी ज्ञान (Globalization, Privatisation and National Knowledge)	223
23.	पूँजी और मानव प्रवाह (World Trade Organization, General Agreement in Tariffs and Trade: Capital and Human Flow)	233
	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी	
24.	ज्ञान समाज के आयाम : पहुँच और समानता के मुद्दे (Dimensions of Knowledge Society: Issues of Availability and Equality)	246
25.	ज्ञान समाज की समालोचना (Criticism of Knowedge Society)	262
26.	रोजगार में संचार माध्यमों और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की बदलती भूमिका (Changing Role of Communication Media & Information and Communication Technology)	273
	विकास, विस्थापन और आंदोलन	
27.	बाँध और विस्थापन (Dams and Displacement)	287
28.	हरित शांति आंदोलन (Green Peace Movement)	296
29.	जनता विज्ञान आंदोलन (Mass Science Movement)	308
30.	नागरिक समाज आंदोलन और जमीन से जुड़े लोग (Civilized Society Movement and People Attached to Earth)	317

■■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

विकास का समाजशास्त्र

(Sociology of Development)

M.S.O.-3

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर अवश्य दीजिए।*

भाग-क

प्रश्न 1. आधुनिकीकरण प्रतिमान के पतन के कारकों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-57, 'आधुनिकीकरण का अर्थ' तथा पृष्ठ-62, प्रश्न 4

प्रश्न 2. मानव विकास दृष्टिकोण का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-13, 'विकास के प्रति मानवीय दृष्टिकोण'

प्रश्न 3. सतत् विकास की अवधारणा का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर–सतत विकास का अर्थ है निरंतर तीव्र आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण, जो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को उन्नत जीवन स्तर एवं बेहतर सुरक्षित व नियंत्रित पर्यावरण की वर्तमान आवश्यकताएँ पूरी कर सके। विकास के अभाव में पर्यावरण का ह्रास अपरिहार्य है तथा पर्यावरण संरक्षण को मानव से अलग नहीं किया जा सकता। संरक्षण का विशिष्ट आदर्श रूप पर्यावरण की दीर्घकालीन सुरक्षा के महत्त्व को कम कर देता है और विकास को निरर्थक कर देता है, इसलिए पर्यावरण को सुरक्षित करना आवश्यक है। आधुनिक प्रौद्योगिकी द्वारा संवर्धित पारम्परिक और देशी ज्ञान आज भी सतत विकास के आदर्श हेतु सर्वोत्तम आधार है।

सतत विकास करने के लिए राज्यों की जिम्मेदारी है कि सभी लोगों की सदा उच्च जीवन-गुणवत्ता पर समझौता किए बिना उत्पादन एवं उपभोग के असतत प्रतिमानों को कम करना चाहिए। प्रौद्योगिकी के नवीनीकरण समेत उनके वर्धन अनुकूलन मिश्रण एवं हस्तांतरण हेतु उचित वैज्ञानिक मनोदशा बनाकर राज्यों को सतत विकास हेतु क्षमता निर्माण उपायों को सशक्त एवं मजबूत सहयोग बनाना चाहिए। पर्यावरण ही प्रत्येक व्यक्ति की सोच का विषय हो और इस संबद्ध विषय को समुचित दरों पर नागरिकों की भागीदारी के माध्यम से बनाया जाना चाहिए, लेकिन राज्य का दायित्व है कि खतरनाक वस्तुओं के खतरे व उनके संभाव्य उपायों को लेकर लोगों के बीच जागरूकता उत्पन्न करे।

सतत शासन हेतु शासन में विकास की कार्यनीति में आर्थिक और पर्यावरणीय सरोकारों का एक समन्वित दृष्टिकोण सम्मिलित होना चाहिए, जिसमें केवल जनता को दिए जाने वाले जीवन स्तर का ही नहीं, बल्कि 'सामाजिक साम्य' को लक्ष्य मानकर एकसमान वितरण का भी ध्यान दिया जाना चाहिए। शासन को जनता के विकास के अधिकारों की भी रक्षा करनी चाहिए और साथ ही पर्यावरण के सरोकारों को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु लोकतंत्र, स्वायत्तता, निष्पक्षता, अंतर्निर्भरता, जिम्मेदारी और जवाबदेही जरूरी है। कोई भी सरकार समाज की भलाई के लिए अपनी नीतियां और कार्यक्रम बनाए, उससे पहले उसे निम्नलिखित गुणों का समावेश करना चाहिए–

1. लोकतांत्रिक सरकार के पास अनेक तंत्र और संस्थाएं होती हैं, जो जनता की व्यवस्था में भागीदारी हेतु कुछ मौलिक अधिकार प्रदान करती हैं।
2. विकास के विकल्पों का निर्धारण नागरिकों और सरकार को मिलकर थोड़ी-बहुत स्वायत्तता के आधार पर करना चाहिए।
3. स्थानीय संसाधनों को समतामूलक तरीके से बनाए रखने और परस्पर बांटने की जरूरत है।
4. वैश्वीकरण के बढ़ते स्तर के साथ राष्ट्रों में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, विकास परियोजनाओं के लिए मदद करने में अंतर्निर्भरता होनी चाहिए।
5. प्रत्येक नागरिक की यह जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरण का संरक्षण और बचाव करे और साथ ही जनता के हितों को भी हानि न पहुँचाए।

प्रश्न 4. भारत में महिला विकास के लिए संवैधानिक गारंटियों का परीक्षण कीजिए।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-110, 'लिंग और संविधान : भारत में महिलाएं' तथा पृष्ठ-114, प्रश्न 2

प्रश्न 5. विकास के मार्क्सवादी विचारों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-75, प्रश्न 1

भाग-ख

प्रश्न 6. वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयामों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-20, पृष्ठ-212, प्रश्न 12

प्रश्न 7. हरित शांति आंदोलन क्या है? इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-28, पृष्ठ-299, प्रश्न 1

प्रश्न 8. जन विज्ञान आंदोलन क्या है? इसकी गतिविधियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-29, पृष्ठ-313, प्रश्न 3 तथा प्रश्न 4

प्रश्न 9. वेब आधारित ज्ञान प्रसार पर प्रवचन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-25, पृष्ठ-265, प्रश्न 2

प्रश्न 10. भारत में बड़े बाँधों के प्रभाव की विवेचना कीजिएं

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-27, पृष्ठ-291, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

विकास और प्रगति–आर्थिक और समाजिक पक्ष

Development and Progress-Economic and Social Aspect

विकास की संकल्पना

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

सारांश Summary

विकास और प्रगति की व्याख्या (Development and Progress Explained)–विकास की बात करने पर उससे जुड़ी अनेक धारणाओं का विचार समक्ष आता है यथा क्रम विकास (Evolution) प्रगति (Progress) परिवर्तन, वृद्धि, कायांतरण इत्यादि। क्रम विकास की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'इवॉल्वेयर' (Evolvere) से हुई है जिसका अर्थ संस्कृत शब्द 'विकास से काफी जुड़ा है। क्रम विकास की अवधारणा किसी सजीव प्राणी अर्थात पेड़ पौधे, जन्तु इत्यादि की आन्तरिक वृद्धि के अर्थ में प्रयुक्त होती है। प्रगति की धारणा का प्रयोग 'आगे बढ़ने' के अर्थ में किया जाता है, जिसे 'प्रगत' कहा जाता है। इस प्रकार प्रगति का मूल अर्थ किसी वांछित लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ना या उन्नति करना है। विकास और प्रगति की अवधारणाओं को समाजशास्त्रियों ने विविध परिप्रेक्ष्य से जाना है, जैसे–दृढ़, प्रकार्यात्मक नव-द्वंद्व, संरचनात्मक प्रकार्यात्मक इत्यादि।

विकास और प्रगति पर कॉम्टे, मोर्गन, मार्क्स और स्पेंसर (Comte, Morgan, Marx and Spenser on Development and Progress)–

विकास की संकल्पना (Concept of Development)

(अ) अगस्त कॉम्टे (1798-1857)–अगस्त कॉम्टे ने मानव समाज में होने वाले परिवर्तन, विकास और प्रगति को अपने अध्ययन का विषय बनाया। समाज के अध्ययन को उन्होंने दो भागों में विभक्त किया–सामाजिक स्थैतिकी अर्थात समाज की प्रमुख संस्थाओं या संस्थानिक का अध्ययन और सामाजिक गति की अर्थात विकास और परिवर्तन का अध्ययन कॉम्टे का कहना है कि कुछ विशेष प्रकार के समाज समाप्त हो रहे थे, साथ ही अन्य नवीन समाज जन्म ले रहे थे। समाप्त होते समाज धर्मविज्ञानी और सैन्य समाज थे, मध्ययुगीन समाज को कैथोलिक चर्च द्वारा प्रतिपादित लोकातीत आस्था ने एकता में बाँधा था। जिस समाज का जन्म हो रहा था वह वैज्ञानिक और औद्योगिक समाज था। इस समाज में वैज्ञानिकों ने धर्मविज्ञानियों का स्थान ले लिया। योद्धाओं का स्थान, उद्योगपतियों, व्यापारियों, प्रबन्धकों और वित्तदाताओं ने ले लिया। कॉम्टे का मानना था कि मानव मस्तिष्क प्रगति के तीन चरणों से होकर गुजरता है। ये निम्न प्रकार है–

(i) धर्म-विज्ञानी

(ii) पराभौतिक

(iii) सकारात्मक

इनका विवरण इस प्रकार है–

(i) धर्म-विज्ञानी अवस्था में मनुष्य किसी भी घटना को ऐसी शक्तियों से जोड़कर देखता है जो मनुष्य के तुलनीय है।

(ii) पराभौतिक अवस्था में मनुष्य किसी घटना को प्रकृति से जोड़कर देखता है।

(iii) सकारात्मक वैज्ञानिक अवस्था में किसी घटना और उसकी कड़ियों को मनुष्य तर्क की कसौटी पर परखता है।

www.neerajbooks.com

(ब) मोर्गन (1818-1881)

मानव समाज के निश्चित क्रम को व्यवस्थित ढंग से रखने का काम सर्वप्रथम मोर्गन ने किया था। उन्होंने तीन युगों का पता लगाया जिनसे होते हुए मानव समाज गुजरा। ये चरण निम्न प्रकार हैं–

(i) असभ्यावस्था (जंगलीपन)

(ii) बर्बरता

(iii) सभ्यता

जीविकोपार्जन के साधनों के विकास में हुई प्रगति के आधार पर उन्होंने जंगलीपन और बर्बर-अवस्था को निम्न, मध्य और उच्च क्रमों में विभाजित किया।

1. जंगलीपन या असभ्यावस्था

(i) **निम्नावस्था**–इस चरण में मनुष्य उष्ण या उपोष्ण वनों में पेड़ों पर रहता था।

(ii) **मध्यावस्था**–इस चरण में आकर मनुष्य ने आग और खाने में मछली का उपयोग प्रारम्भ कर दिया था।

(iii) **उच्चावस्था**–मनुष्य ने धनुष और तीर का आविष्कार कर लिया था।

2. बर्बरता

(i) **निम्नावस्था**–कुम्हारी (मिट्टी के बर्तन बनाने की कला) के प्रारम्भ से व्यक्ति ने बर्बरता के चरण में प्रवेश किया।

(ii) **मध्यावस्था**–इसका आरम्भ पूर्व में पशुओं को पालतू बनाने से और पश्चिम में खाद्य पौधों की खेती से हुआ।

(iii) **उच्चावस्था**–इसका आरमभ लौह अयस्क के प्रगलन (गलाने) से होता है और वर्णानुक्रमिक लेखन के आविष्कार और साहित्यिक दस्तोवजों के लिए इसके उपयोग के द्वारा सभ्यता में पहुँचता है।

3 सभ्यता–इस अवधि में प्राकृतिक उत्पादों के और दोहन तथा परिमार्जन–उद्योग और कला का ज्ञान प्राप्त हुआ।

(स) कार्ल मार्क्स (1818-1883)

मार्क्स समाज के आमूल परिवर्तन की बात करते हैं। उन्होंने मानव विकास के एक व्यापक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसके अनुसार समाज के भौतिक ढाँचे में नैसर्गिक अंतर्विरोध विद्यमान होते हैं। समाज की वास्तविक आधारशिला उसका आर्थिक ढांचा है, जिस पर वह टिका होता है। "सामाजिक उत्पादन में व्यक्ति निश्चित सम्बन्ध बनाता है, जो उसके लिए अपरिहार्य है। इन उत्पादन सम्बन्धों का योग ही समाज का आर्थिक ढाँचा बनाता है। भौतिक जीवन में उत्पादन रीति ही जीवन को सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं के सामान्य स्वरूप को निर्धारित करती है। समाज की उदीयमान उत्पादन शक्तियाँ विद्यमान सम्बन्धों से टकराती हैं। नवीन उत्पादक शक्तियों का उदय और उनमें निहित अंतर्विरोध मानव इतिहास का सार है।

(द) हरबर्ट स्पेंसर (1820-1903)

हरबर्ट स्पेंसर के चिंतन का मुख्य विषय समाज का उत्तरोत्तर विकास सिद्धान्त था। स्पेंसर की मान्यता थी कि युगों से एक सरल एकरूप या समजातीय ढांचे से जटिल बहुविध या बहुजातीय ढांचे में सामाजिक विकास होता रहा है। विकास की प्रक्रिया में अपनी रचना के आधार पर समाज सरल से विभिन्न स्तर के संयुक्त समाजों की दिशा में बढ़ते हैं। कुछ सरल समाज का समूह संयुक्त समाज की रचना करता है। कुछ संयुक्त समाजों का समूह दोगुना संयुक्त समाज बनाता है। दोगुने संयुक्त समाजों के समूह संयुक्त समाज बनता है। सरल समाज कुलों में एकीकृत परिवारों से, तो दोगुना संयुक्त समाज, कबीलों में गठित कुलों से बने होते हैं। तिगुना संयुक्त समाज में कबीले मिलकर राष्ट्र या राज्य का निर्माण करते हैं। समाज की प्रगति के पीछे सबसे बड़ा हाथ जनसंख्या दबाव का होता है।

विकास और प्रगति पर टोनीज, दुर्खाइम, वेबर, हॉब्हाउस और पारसंस (Tonnes Durkheim, Weber, Hobhouse and Parsoms on Development and Progress)

1. टोनीज (1855-1936)–टोनीज के मतानुसार जेमीनस्काफ्ट (Gemeins chaft) में मनुष्य को उसकी प्राकृतिक दशा अर्थात रक्त सम्बन्ध, विवाह, पति और पत्नी, मां और बच्चे और भाई-बहनों में सुहृद सम्बन्ध के द्वारा एक-दूसरे से बंधा रहता है। इनके जेमीनस्काफ्ट में नातेदारी समूह, आस-पड़ोस और मित्रता प्रमुख समूह हैं, जो एक साझी इच्छा के द्वारा संचालित होते हैं।

'गेंसेलस्काफ्ट' में साझी इच्छा नहीं होती, बल्कि उसमें व्यक्ति निजी स्वार्थ से संचालित होता है।

विकास का अर्थ–जेमीनस्काफ्ट या मानव समुदाय की क्षति है। औद्योगिक क्रान्ति परिवार के विचार को छिन्न-भिन्न किए दे रही है और उसकी जगह तथ्यों और प्रगुणता को महत्त्व दे रही है।

(2) दुर्खाइम (1858-1917)–दुर्खाइम सामाजिक समेकता (Social Solidarity) की बात करते थे। उनका तात्पर्य नैतिक विश्वास और विचार थे, जो सामाजिक जीवन में अंतर्निहित 'सामान्य बुद्धि' को परिभाषित करते हैं। यांत्रिक सुदृढ़ता जो कि प्रौद्योगिक समाजों की विशेषता थी, वह लोगों में सहमति और अनन्यता पर आधारित थी।

औद्योगिक समाजों में जैव सुदृढ़ता (Organic solidarity) अनेक प्रकार के मतभेदों को सहने की सहमति से आई।

प्रौद्योगिक समाजों में श्रम का विभाजन नहीं होता। हर व्यक्ति समान तरीके से काम करता और उपभोग करता है। जैव सुदृढ़ता में क्रियाकलापों में विशेषता और श्रम विभाजन उन्नत होता है। इसमें उत्पादन, विवरण और उपभोग विशेष तरीके से होता है।

(3) मैक्स वेबर (1864-1920)–मैक्स वेबर का कथन था कि प्रगति के प्रतीक के रूप में पूंजीवाद का उदय कार्य-नैतिकता; बचत, मितव्ययी जीवन-शैली के विश्वासों, मूल्यों और दृष्टिकोणों को तर्कसंगत बनाने से हुआ है। पूँजीवादी औद्योगिकीकरण, पश्चिमी यूरोप के कुछ चुनिंदा देशों में हुआ और अन्य में नहीं, क्योंकि इन देशों के केल्विनवादी प्रोटेस्टेंट मतावलंवियों ने अपने विचारों, धार्मिक

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

विश्वासों और मूल्यों को तर्कसंगत बनाकर सांसारिक वैराग्य वाली जीवनशैली का विकास किया ताकि वे उपभोग कम कर सकें और उद्योग-धंधों में निवेश को प्रोत्साहन दे सकें।

(4) एल.टी. हॉब्हाउस (1864-1929)–उन्होंने कहा कि 'मानव मस्तिष्क का विकास सामाजिक विकास में निर्णायक कारक' था। मस्तिष्क का विकास सामाजिक विकास को लेकर आता है। इस मानसिक विकास में तर्कसंगत नैतिकता के आदर्श की दिशा में नैतिक विचारों का विकास सम्मिलित है जिससे प्रमुख सामाजिक संस्थाओं का कायापलट होता है, इसलिए इसे प्रगतिशील कहा जा सकता है।

(5) पारसंस–पारसंस ने विकासवादी सार्विकों(Evolutionary Universals) की अवधारणा प्रस्तुत की। उनका तात्पर्य यह था कि ऐतिहासिक विशिष्टताओं के बावजूद प्रत्येक सामाजिक प्रणाली का विकास कुछ सामान्य दिशाओं में हुआ है। पारसंस ने निम्न प्रकार के समाजों का विश्लेषण किया–आदिम, मध्यवर्ती और आधुनिक।

(1) आदिम समाजों का सामाजिक गठन प्रारम्भिक होता है। उनकी आर्थिक गतिविधियाँ भी प्रारम्भिक होती हैं।

(2) मध्यवर्ती समाजों का विकास आदिम समाजों में जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप मानव बस्तियों, कस्बों और नगरों में दोहरे विभाजन के फलस्वरूप होता है। समाज में पेशागत विभेदन और नए वर्गों का उदय भी होता है।

(3) आधुनिक समाज मानवता को पाश्चात्य जगत का अनूठा योगदान है, जिनका विकास औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप हुआ। आधुनिक समाज की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं–सर्वरक्षावादी कानून (Universalistic Law), मुद्रा और बैंकिंग के आधुनिक संस्थानों का विकास, तार्किक नौकरशाही और लोकतांत्रिक समाज का विकास।

वृद्धि, परिवर्तन और आधुनिकीकरण के रूप में विकास (Development as Increase, Change and Modernization)

विकास के अनेक अर्थ–विकास को अनेक अर्थों में लिया गया है। जैसे वृद्धि के रूप में विकास, परिवर्तन के रूप में विकास और आधुनिकीकरण के रूप में विकास।

(1) वृद्धि–आर्थिक दृष्टि से वृद्धि के रूप में विकास से तात्पर्य उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन की क्षमता में वृद्धि और उसके साथ-साथ उपभोग के प्रतिरूप में भी वृद्धि से है। वृद्धि के रूप में विकास को मनुष्य की रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा और शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता में वृद्धि की दृष्टि से परिभाषित किया जा सकता है।

(2) परिवर्तन और कायान्तरण–परिवर्तन और कायान्तरण के रूप में विकास का तात्पर्य मानव समाजों में परिवर्तन की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से है।

(3) आधुनिकीकरण–विकास को आधुनिकीकरण के रूप में भी माना जाता है। आधुनिकीकरण को प्रायः विकास के माध्यम के रूप में भी देखा जाता है। आर्थिक कार्यक्षेत्र में इसे औद्योगीकरण, शहरीकरण और कृषि में प्रौद्योगिकीय रूपान्तरण की प्रक्रियाओं के रूप में लिया जाता है। सामाजिक कार्यक्षेत्र में आधुनिकीकरण का अर्थ प्रदत्त सम्बन्धों का कमजोर पड़ना और प्रगति के मामले में व्यक्तिगत उपलब्धि को महत्ता मिलना है।

विकास के पूंजीवादी, समाजवादी और तीसरी दुनिया के मॉडल (Capitalistic, Socialistic and Third World Model of Development)

द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद के काल में एक ओर पश्चिम और दक्षिणी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका का औद्योगिक और राजनीतिक उदय हुआ, तो दूसरी ओर रूस और साम्यवादी राज्य विश्वपटल पर उभरे। एक बड़ा धड़ा प्रगतिरुद्ध राष्ट्रों का भी रहा, निम्न उत्पादकता, औद्योगिक पिछड़ापन और गरीबी जिनकी पहचान बनी।

इस प्रकार पहली, दूसरी और तीसरी दुनिया के क्रमशः पूंजीवादी, समाजवादी और तीसरी दुनिया के विकास मॉडलों का जन्म हुआ।

1. पूंजीवादी मॉडल में सम्पत्ति और उत्पादन के साधनों का स्वामित्व निजी हाथों में होता है, आर्थिक उद्यमों पर राज्य का नियन्त्रण न्यूनतम होता है और अर्थव्यवस्था मुक्त होती है। विकास का यह मॉडल सतत वृद्धि और आधुनिकीकरण पर विशेष बल देता है।

2. समाजवादी मॉडल विकास के पूंजीवादी मॉडल का विपरीत था, क्योंकि यह सम्पत्ति और उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व को समाप्त करता था, बल्कि यह उत्पादन के साधनों पर राज्य का स्वामित्व, राज्य के स्वामित्व में सार्वजनिक उपक्रमों में राज्य द्वारा नियमित अर्थव्यवस्था और विकास के लिए राज्य द्वारा केन्द्रीयकृत नियोजन की बात करता है।

3. तीसरी दुनिया में एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमेरिका के पूर्व-उपनिवेश नव-स्वतंत्र और गुटनिरपेक्ष देश आते हैं, जो औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हैं। ये देश विकास के विविध मॉडलो पर प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए भारत ने अपने विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया है। यह पूंजीवादी और समाजवादी मॉडलों के बीच का रास्ता है।

विकास के सामाजिक एवं मानवीय आयाम (Social and Humanatarian Dimensions of Development)–तीसरी दुनिया के देशों में विकास के पैटर्न में निम्न रुझान है–

1. तेजी से वृद्धि कर रहे विकासशील देशों ने सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में उच्च वृद्धि दर्ज की पर उससे इन देशों की जनसंख्या के बड़े भागों की सामाजिक-आर्थिक वंचना में कोई कमी नहीं आ सकी है।

2. औद्योगिक देशों की उच्च आय वहाँ नशाखोरी, शराबखोरी, एड्स, आवासहीनता, हिंसा और पारिवारिक सम्बन्धों में टूटने जैसी तेजी से फैल रही सामाजिक चिन्ताओं से सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाई

www.neerajbooks.com

है।

3. कुछ कम आय वाले देशों ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि यदि उपलब्ध साधनों-संसाधनों को प्रवीणता से आधारभूत मानवीय क्षमताओं को उन्नत करने में लगाया जाए तो मानव विकास का उच्च स्तर प्राप्त करना सम्भव है।

मानव विकास–मानव विकास के सभी सोपान निम्न प्रकार हैं–

(1) लोग दीर्घ और स्वस्थ जीवन जी सकें।

(2) वे ज्ञान आर्जित कर सकें।

(3) एक संतोषजनक जीवन-स्तर प्राप्त करने के लिए जरूरी संसाधनों तक उनकी पहुँच।

ये अनिवार्य विकल्प उपलब्ध नहीं हो, तो अन्य प्रकार के विकल्प के दरवाजे भी लोगों के लिये नहीं खुल पाते हैं।

यूएनडीपी के अनुसार मानव विकास के दो पहलू हैं–

(1) मानव क्षमाताओं का निर्माण जैसे उन्नत स्वास्थ्य, ज्ञान और संसाधनों तक पहुँच।

(2) लोगों का इन क्षमताओं को उत्पादन कार्यों में लगाना, जैसे–सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिजक मामलों में सक्रिय रहना।

विकास के प्रति मानवीय दृष्टिकोण (Humanitarian Approach towards Development)

विकास के प्रति मानवीय दृष्टिकोण परम्परागत दृष्टिकोण से भिन्न है, जैसे–आर्थिक वृद्धि, मानव पूंजी निर्माण, मानव संसाधन विकास, मानव कल्याण, मूलभूत मानवीय आवश्यकता सम्बन्धी दृष्टिकोण। आर्थिक वृद्धि अर्थात् उत्पादन (GDP) में वृद्धि मानव विकास के लिए आवश्यक तो है, पर्याप्त नहीं। मानवपूंजी निर्माण और मानव संसाधन विकास के सिद्धान्त मनुष्य को एक साधन के रूप में देखते हैं, साध्य के रूप में नहीं। मानव कल्याण का लोगों की विकास के लाभों का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मानकर चलता है, उसमें भागीदार नहीं। मानव विकास का दृष्टिकोण उत्पादन और संसाधनों के वितरण, मानव क्षमताओं के विस्तार और उपयोग, विकल्पों के विस्तार, आजीविका की सुरक्षा, भागीदारी की प्रक्रिया, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता इन सब को समान महत्त्व देता है।

(2) बेरहम, जड़विहीन वृद्धि के प्रति चिन्ता (Concern for Pitiless Rootless Increase)–वृद्धि-विकास के पारम्परिक रास्ते में चलकर विश्व का ध्रुवीकरण और अधिक हुआ है। गरीब और अमीर के बीच की खाई और गहरा गयी है। विश्व की निर्धनत 20 प्रतिशत जनसंख्या की आय गत 30 वर्षों में 2.3 प्रतिशत से घटाकर 1.4 प्रतिशत हो गयी। सबसे धनी की आय 70 प्रतिशत से 85 प्रतिशत हो गई। औद्योगिक और विकासशील देशों की प्रतिव्यक्ति आय में अन्तर तीन गुना हो गया है। यूएनडीपी ने 1990 के दशक के उत्तरार्ध में इस रोजगार विहीन, बेरहम, बेआवाज, जड़विहीन और धनविहीन वृद्धि के प्रति चिंता प्रकट की है। यह वृद्धि रोजगार विहीन रही क्योंकि इसमें अर्थव्यवस्था तो बढ़ी मगर इससे रोजगार के अवसरों में कोई विस्तार नहीं हुआ जिससे कि जनसंख्या के बढ़े हिस्से लाभान्वित हो सकें।

(3) स्वतन्त्रता के रूप में विकास (Development as Freedom)–अमर्त्य सेन (1999) के अनुसार विकास लोगों को मिलने वाली वास्तविक स्वतन्त्रता को बढ़ाने की अति महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। विकास का मुख्य प्रयोजन लोगों के जीवन को उन्नत बनाता है, बेहतर बनाता है, जिसका तात्पर्य उन सभी चीजों को विस्तार देना है, जो आदमी कर सकता है। विकास का लक्ष्य निरक्षता, बीमारी, गरीबी, संसाधनों तक पहुँच की कमी, नागरिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता की कमी इन सब बाधाओं को दूर करना है।

विकास रणनीतियों में प्रतिमानात्मक परिवर्तन–उपनिवेशोत्तर विकासशील देशों की विकास रणनीति में 1970 के दशक के पूर्वार्ध से भारी परिवर्तन आया है। उदाहरण के लिए भारत ने स्वतन्त्रता के तत्काल बाद "स्थिरता के साथ वृद्धि" की विकास रणनीति अपनायी। इसके तहत मुख्यत: औद्योगीकरण, कृषि के आधुनिकीकरण, ढांचे के विस्तार, शिक्षा और जनसंचार पर ध्यान दिया गया।

राज्य की भूमिका की पुनर्व्याख्या करना (Re-interpretation of State's Role)–विश्व विकास रिपोर्ट (1997) ने सामाजिक और आर्थिक विकास में राज्य की एक प्रभावशाली भूमिका की आवश्यकता पर बल दिया है। राज्य आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अनिवार्य है-वृद्धि का प्रत्यक्ष प्रदाता के रूप में नहीं, बल्कि एक भागीदार; उत्प्रेरक और सुगमकारी के रूप में। विश्व बैंक कहता है कि मानव कल्याण को बढ़ावा देने के लिए राज्य की क्षमता को बढ़ाना होगा।

उपेक्षित वर्गों के सशक्तीकरण पर ध्यान (Attention to Strengthening Neglected Sections)

विश्व विकास शिखर वार्ता (1995) 'जन पहल', 'जन-सशक्तीकरण' और 'जन-क्षमताओं को सशक्त' बनाने की बात करती है। विकास के उद्देश्यों के सिलसिले में शिखर वार्ता कहती है कि "लोगों, खासकर महिलाओं का सशक्तीकरण, उनकी क्षमताओं को मजबूत बनाना ही विकास का मुख्य उद्देश्य और संसाधन है। पूर्ण जन भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए राज्य को 'अंतर्राष्ट्रीय कानूनों दायित्वों के संगत संविधान, कानूनों और प्रविधियों के अनुरूप स्थिर कानूनी ढांचा' प्रदान होगा।

स्वपरख-अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. विकास और प्रगति से क्या तात्पर्य है?

What is understood by Development and Progess.

उत्तर–विभिन्न प्रत्यय (Various Concepts)–विकास के सम्बन्ध में विचार करते समय उससे जुड़ी अनेक धारणायें हमारे मस्तिष्क में आती हैं। यथा–क्रमविकास (Evolution), प्रगति